बौद्ध युग

- बौद्ध परम्परा में वाद्यवृन्द तथा नृत्य के विशद चित्र उपलब्ध हैं।
- वैदिक तथा लौकिक दोनों पक्षों का प्रचलन था।
- सामवेद की शिक्षा - वैदिक अध्ययन तथा गान्धर्व का अन्तर्भाव शिल्प में किया जाता था।
- विप्र वर्ग कला का व्यवसाय करते थे जिन्हें हीन माना जाता था
- संगीत का अनुष्ठान - विरज्ज, समज्ज तथा अन्य लौकिक उत्सवों पर किया जाता था।
- नट, नर्तक आदि अभिनेता को हीन दृष्टि से देखा जाता था।
- बौद्ध काल में तक्षशिला विद्याध्ययन का मुख्य केन्द्र था। जिसमें वैदिक विद्यालय, अष्टादश विद्यालय थे। वाराणसी दूसरा विद्या केन्द्र था।

* संस्कृत के स्वतन्त्र अध्ययन का विभाग था।
* नालन्दा, विक्रमशिला तथा मदन्तपुरी विश्वविद्यालय के समान गन्धर्व का स्वतंत्र विभाग था।
* संगीत के लिए 'गन्धर्व वेद' की संज्ञा थी।
* बुद्ध के जन्म पर 85 सौ वाद्यों का वादन हुआ।
* महतीवीणा, मृदंग, पणव, तूर्य, वेणु आदि प्रमुख वाद्य थे।
* राज्यसभा में गायक, वादक, नर्तक नियुक्त रहते थे।
* संगीत एवं नाट्य को राज्याश्रय प्राप्त था।
* नट, नर्तक, गायक, भेरीवादक, नाटककारों के लिए स्वतन्त्र निवास की व्यवस्था थी।
* चीनी यात्री फाहियान ने कहा मगध में सामूहिक उत्सव समज्या या समाज कहे जाते थे।
* अवसरों आख्यानों का गान भी किया जाता था।
* इस काल में
  तत् वाद्य - वीणा, परिवादिनी, विपंची, वल्लकी, महती, नकुली, कच्छपी तथा तुम्बकी।
  अवनद्ध - मृदंग, भेरी, पणव, डुंडुभी का उल्लेख
  घनवाद्यों में - घण्टा, झल्लरी, झल्लरी तथा कांस्य
  सुषिर - शंख, तूर्य, कुराल, शृंग आदि का उल्लेख मिलता है।

लंकावतार सूत्र में वर्णित है। — भगवान बुद्ध के
अन्तर्धान होने पर रावण ने वीणा से महासुरों से युक्त
गाथा गाना आरंभ किया।

वीणा वादन इन्द्र नीलमणि खण्ड से किया जा
रहा था।

स्वरावली थे — षड्ज, ऋषभ, गान्धार, धैवत,
निषाद मध्यम तथा कौशिक

इस काल में थेरीगाथा की रचना हुई। जो बौद्ध
भिक्षुणियों के भाव-प्रवण गीतों का संग्रहण।
यह संगीतमय काव्य संग्रह है। इसमें 522 गीतों
का संग्रह है। यह राग-रागनियों में आबद्ध है।